सागर में लहरें क्यों उमड़ रही हैं ?

जलधी को लाघकर, शोर कर के
अपनी सिहर भरी हाथों से
वसुधा को छूती हैं लहरें।

वजह क्या है? कुछ है? पता नहीं
फिर भी धरती से हाथ मिलाने -
कैसिए तरस रही हैं लहरें।

लाख कोशिशें के बाद भी
कुछ नहीं मिलपाते हैं लहरें
अपनी प्रेमी धरती से ?

पल पल में जागती हैं
अगले पल सागर में छिप जाती हैं
फिर भी धरती को छूने के चाह क्यों
छिपा नहीं पाते लहरें।

नभ और वसुधा के बीच
फिर भी दोनों से लाखों दूर
स्थित लहरें दोनों को छूने की
कोशिश में हैं।

कभी तेज कभी उड़कर
कभी शांत कभी क्रोध से
से सागर में उमड़ रही हैं लहरें।

लाख कोशिशों के बाद भी
कुछ नहीं मिलपाते हैं लहरें
अपनी दोस्त नभ से ?

अपनी दर्द को अंतर दबाकर
मनु के साथ खेलती हैं लहरें
फिर भी क्यू पता नहीं
दर्द छुपाने में कामयाब न रही हैं लहरें।

शायद चाह की कारण, नहीं तो
साफ दिल है वजह, मुझे
सागर में उमड़कर
जीवन पुकारती हैं लहरें।

लाख कोशिशों के बाद भी
क्यू नहीं मिलपाते हैं लहरें
धरती से?
क्यू न मिल पाते हैं अपनी प्रेमि से?

पास आकर बिछड़ जाती हैं
हाथ पकड़कर भी छूट जाती है
आखिर क्या वजह है
इनकी दूरियों का?

नीले रंग में गीले हुए हैं लहरें।
सबकी आँसू पोन्छकर
खुद छिपकर रोती हैं लहरें।

कुछ लोग सागर को जिंदगी देती हैं
कुछ लोग सागर से जिंदगी चलाती है
वो भी नहीं सुनपाते हैं, न
समझपाते हैं लहरों की उमड़ने की
वजह।

जलधी के अंतर की प्राणियों से है
उनको प्यार, पर शायद उनको
भी पता नहीं है लहरों के
अंतर का गाँव।

एक दिन आएगा ज़रूर
धरती, जलधी और सागर
मिलेगा ज़रूर।
लहरें जीतेंगी ज़रूर।

तब न रोक पाएगा मनु
न रोक पाएगा भगवान
सबकी मर्ज़ी के विरुद्ध
मिलेंगे ये लोग।

तब होगी लहरों के इंतज़ार का अंत
तब होगी लहरों की इस जंग से जीत
तब सागर में उमड़-घुमड़ कर मनाएंगे
लहरें अपनी खुशी का जश्न

उस दिन का इंतज़ार है लहरों को
कब पता नहीं, पर आना तय है
तब मनु का विवाह होगा, और
प्रेमियों का मिलन।

वह दिन ज़्यादा दूर नहीं है
शायद आज होगा, न तो कल होगा
इसका फैसला करने वाले हैं ऊपर
पर आने में है न देरी।

आना ही है पास
आना ही है साथ
कब तक बिछड़के रहेंगे
कब तक हाथ छूटते रहेंगे।

एक दिन आएगा ज़रूर
धरती, जलधी और सागर
मिलेगा ज़रूर
लहरों का जीत होगा ज़रूर।